वर्तमान परीप्रेक्ष में सर्वोत्मुखी समाधान के सन्दर्भमें अद्वैत वेदान्त दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का तुल्नात्मक अध्ययन |

प्रशिक्षु : अपेक्षाबा गोहिल |

(आत्मीय यूनिवर्सिटी , राजकोट)

परामार्शदाता : विशाल छाया जी |

(डिप्लोमा मैकेनिकल डिपार्टमेंट एवं यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यू , आत्मीय यूनिवर्सिटी , राजकोट)

प्रकाशान तिथि : 15 सितंबर 2022

यह कार्य IKS इंटर्नशिप कार्यक्रम के तहत किया गया है |

इंटर्नद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि यह रिपोर्ट मेरे अपने शब्दों में मेरे विचारों को प्रस्तुत करती है और जहां दूसरों के विचारों या शब्दों को शामिल किया गया है, वहां मैंने मूल स्रोतों को पर्याप्त रूप से दर्शाया है और उनका संदर्भ दिया है । मैं घोषणा करती हूँ कि मैंने इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करने में उपयोग किए गए सभी स्रोतों को ठीक से और सटीक रूप से स्वीकार किया है। मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने अकादमिक ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के सभी सिद्धांतों का पालन किया है और मेरे प्रस्तुतीकरण में किसी भी विचार / डेटा / तथ्य / स्रोत को गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है अथवा गढ़ा या मिथ्या रूप में नहीं दिया गया है। मैं समझती हूँ कि उपरोक्त का कोई भी उल्लंघन पाए जाने पर आईकेएस प्रभाग द्वारा अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है और उन स्रोतों द्वारा दंडात्मक कार्रवाई भी हो सकती है जिनका इस प्रकार उचित रूप से उल्लेख नहीं किया गया है या जिनसे आवश्यकता होने पर उचित अनुमति नहीं ली गई है।

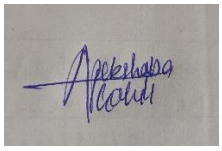

इंटर्न के हस्ताक्षर

मेंटरद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र :

मैं एतद्द्वारा प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त रिपोर्ट सत्य है और यह कार्य मेरे मार्गदर्शन में किया गया था।

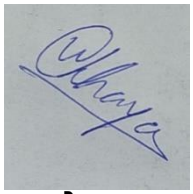

मेंटर के हस्ताक्षर

विषय-सूची (table of content)

Sr No.	Name of topics	Page no.
1.	सार	03
2.	कार्यकारी सारांश	03
3.	परिचय	07
4.	पृष्टभूमि एवं प्रामाणिकता	08
5.	परियोजना का विवरण	09
6.	पध्दति अथवा प्रक्रियाएं	16
7.	परिणाम	16
8.	विचार-विमर्श	16
9.	निष्कर्ष और सिफारिशें	17
10.	स्वीकृतियाँ	17
11.	संदर्भ	18
12.	परिशिष्ट	18

सार

इस अध्ययन से भारतीय दर्शन प्रणाली के प्रति जागरूकता बाधना एवं जीवन के सर्वोच्य लक्ष्य को पहचानने में सहायक होसकता है | भारतीय दर्शनों मेसे यहाँ अद्वैत वेदान्त दर्शन और मध्यस्थ दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है | जहा निरंतर सुख पूर्वक जीने के सवरूप को पहचानना | अस्तित्व के प्रयोजन को पहचानना और दर्शन को तर्क पूर्ण विधि से लोकव्यापीकरण करना । इस अध्ययन से वर्त्तमान शिक्षा पद्धती और व्यवस्था में दर्शन की प्रासंगिता को पहचानना और इन की महत्ता को समजना | यहाँ हमें मध्यस्थ दर्शन में जीवन में व्यवस्था और जीने की समज दीखाई देती है | वैसे ही अद्वैत वेदान्त दर्शन में से हमें ब्रह्म का सही स्वरूप का ज्ञान और माया या मिथ्या क्या है वो पता चलता है | इन दर्शनो का वर्त्तमान परिस्थिति में दर्शन के संदर्भ में मानव सम्बंधित समस्या और उनकी की समीक्षा भी दर्शाया गया है |

Abstract

From this study, it can be helpful to create awareness about the Indian philosophy system and to identify the highest goal of life. Among the Indian philosophy(darshans), here is a comparative study of Advaita Vedanta philosophy and Madhyastha philosophy. Where to recognize the nature of living happily ever after. Recognizing the purpose of existence and to popularize philosophy in a logical manner. To recognize the relevance of philosophy in the current education system and understand its importance from this study. Here we see the understanding of order and living in life in the Madhyastha philosophy. Similarly, from Advaita Vedanta philosophy, we get to know the true nature of Brahman and what is Maya or Mithya. In the current situation of these philosophies, human related problems and their review have been shown in the context of philosophy.

कार्यकारी सारांश

IKS के अंतर्गत इस इन्तेर्शिप में यहाँ दो भारतीय दर्शनों का विवरण किया है उनके तुलनात्मक मुदो को देखेंगे | आज के समय में दर्शनों कितने मूल्यवान है | और उनका ज्ञान कितना आवश्यक है | यहाँ हम अद्वैत वेदान्त दर्शन और मध्यस्थ दर्शन को दर्शाया गया है |

आचार्य शंकर द्वारा अद्वैत वेदान्त के सूत्र ' ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या ', ' अहम् ब्रह्मास्मि ' को स्पष्टा से देखेंगे | अद्वैतवाद मे ब्रम्ह , माया और जगत के बारे मे दर्शाया गया है | जिस मे ब्रम्ह को सत् कहा गया है (सत् यानिकी जो त्रिकाल अबाधित है या जो तीनों काल मे है) | यहा ब्रह्म को निर्गुण (गुणो से परे) कहा गया है | अद्वैत वेदान्त का अध्ययन करेने से मुझे मालूम हुवा है की ब्रह्म ही परम सत्य है | " ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या" मे आचार्य शंकर कहते है की अगर कोई सत्य है तो वो सिर्फ ब्रह्म है | शंकरजी यहाँ सत्य यानि truth की बात नहीं कर रहे है वह सत् यानिकी अस्तित्व (existence) को ब्रह्म कहते है | यहाँ ब्रह्म को अनंत कहते है और कहते है के जो वास्तु अनंत है उसका आकार नहीं होसकता |

शंकरजी कहते है की जो वास्तु में बदलाव आता है वो सत् नहीं हो सकता सत् वो है जो आज भी वही है कल भी वही था और आने वाले कल में भी वही रहेगा उसमे बदलाव नहीं आसकता | " नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः " इस श्लोक का अर्थ है की जो चीज अस्तित्व में है उसका कभी नाश नहीं हो सकता , तो ब्रह्म अविनाशी , ब्रह्म में कोई परिवर्तन ही नहीं होता और जब परिवर्तन नहीं होता ततो उसका नाश कैसे होगा ? तो ब्रह्म ही अविनाशी है और सब नश्वर है , जो सिमित होगी वो नश्वर होगी |

मिथ्या अध्यास है यानि की एक एसी चीज है जो अपने सत्य के स्वरूप में नहीं दिखाई देती है यानि के 'सदा सत्' मतलब जगत जैसा होना चाहिए वैसा नही दीखता | एक उदारण के स्वरूप में लेते है की सूर्य थाली जैसा दिखाई देता है पर वास्तव में वह एक गोला है | तो फिर प्रश्न होता है की ये जगत कहा से आया, जब ब्रह्म बदलता ही नहीं है तो ये बदलाव कहा से हो गए? तो शंकरजी कहते है की ये अवस्था ब्रह्म का स्वरूप लक्षण नहीं है | ये प्रतिभासिक है जैसे देवदत् की सोने की स्थिति और खड़े होने की स्थिति लेले तो देवदत् तो वाही है परंतू यह देवदत् के स्वरूप मा नहीं है | यह इनके ऊपर आध्यास करदी गई है | जो अभेद में भी भेद व्यैदा करदे उसे मिथ्या कहते है | जिस का नाम और रूप व्यैदा करदे उसे कहते है माया | माया भी अनादी है |

माया क्या करती है? माया आधार को ढकदेती है, माया अज्ञान रेप है, अज्ञान के कारण से हम उस आधार को पूरा नही देखपाते | उदाहरण स्वरूप हमें रेल की पटरी मिलती नहीं फिर भी मिलती हुई देखी देती है | माया ने भेद उदपान कर दिया है | साडी चीज़े जो माया ने बनाई है वो सब नश्वर है, उनसभी चीजों का नाश हो जाता है | जब ब्रह्म का ज्ञान जो जाता है तो दुःख सुख सब नष्ट हो जाता है | तो दो चीज ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या |

ब्रह्म सत् के साथ चित भी है | कोई भी वास्तु ब्रह्म के साथ तुलना नहीं कर सकता | यह दो अनंतता को साथ में लाने जैसा है परंतू अनंत सिर्फ एक ही हो सकती है वो है ब्रह्म |

मध्यस्थ दर्शन की बात करे तो, इन के रचिता ए नागराज का जन्म अग्रहार गांव के वेद मूर्ति परिवार से थे 11 वर्ष की उम्र में उन्होंने वेदों का पठन पूरा कर दिया था किंतु वेदों में से उनको प्रश्न उठते थे कि यदि ब्रह्मा (सत्य) से ही जगत की उत्पत्ति हुई है तो यह सब (जगत)मिथ्या (असत्य) कैसे हो सकता ह ? ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष का कारण कैसे है ?यदि सबकुछ ब्रह्म की लीला है तो मेरे होने या ना होने का क्या अर्थ है ?

जीज्ञाशु ए नागराज जी ने उनके प्रश्नों हेतु हर एक कार्य किया जिससे उनके प्रश्नों का उत्तर मिल सकता था जिसमें उन्होंने अपने मामा जी के यहां विधिवत वेदों का अध्ययन किया परंतु इस अध्ययन के बाद भी उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला | आखिर में उन्होंने समधी ली ताकि ज्ञान प्राप्त कर सके परन्तु उसमे भी उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला फिर संयम की मदद से उन्हें अस्तित्व का दर्शन हुआ जिसका उन्होंने 5 वर्ष तक अध्ययन किया और एक नए दर्शन का जन्म हुआ |

मध्यस्थ दर्शन क्या है ? मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) भारत वर्ष में निर्गमित एक नया दर्शन है जो श्री अग्रहार नागराज द्वारा प्रतिपादित एवं लिखित है | यह "अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन" है | दर्शन का तात्पर्य वास्तविकता को जैसे है वैसे ही समझने तथा प्रकट करने से है | मध्यस्थ दर्शन में बताया गया है की ,अस्तित्व सहअस्तित्व है | यही परम सत्य है |

मध्यस्थ दर्शन मे सहसतीत्व की व्याख्या – साथ होना है | किसका साथ होना ? व्यापक (खाली स्थान); इकाई (परमाणु) जिसमे से व्यापक को ऊर्जा के स्वरूप माना गया है | और ऊर्जा को ईश्वर कहा गया है | उसी प्रकार खाली जगह जो इकाई को समा लेता है इसी वजह से उसे ऊर्जा का स्वरूप बोला गया है | इकाई जो परमाणु है जिसमे से अणु और कई अवस्थाओ का निर्माण होता है |

यह वर्तमान में प्रचलित किसी भी आस्थावादी व् ईश्वर केन्द्रित कार्यक्रमों से सुख पाने के आदर्शवादी चिंतन अथवा भौतिक वस्तु सम्बंधित सुविधा का भोग कर सुख पाने वाले कोई भौतिकवादी विचार से अलग विचार प्रस्तुत कर रहा है । इस विचार का मूल आधार अनुभव मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान है ।

Exclusive summary

In this internship under IKS, two Indian philosophies have been described here, we will see their comparative issues. How valuable are darshans in today's time? And how important is their knowledge? Here we have been depicted Advaita Vedanta Philosophy and Madhyastha Philosophy.

Acharya Shankar's sutras of Advaita Vedanta 'Brahma Satya, Jagat Mithya', 'Aham Brahmasmi'. In Advaita, Brahma, Maya and Jagat are shown. In which Brahman is said to be Sat (Sat means that which is unobstructed in three times or which is in all three times). Here Brahman is said to be nirguna (beyond the qualities). By studying Advaita Vedanta, I have come to know that Brahma is the ultimate truth. In "Brahma Satya Jagat Mithya", Acharya Shankar says that if there is any truth then it is only Brahman. Shankarji is not talking about the truth here, he calls the existence of the truth as Brahman. Here Brahma is called infinite and it is said that the thing which is infinite cannot have its shape.
Shankarji says that the change that comes in the Vastu cannot be Sat, the Sat is the one that is the same today, was the same yesterday and will remain the same in the coming tomorrow as well. "Nasto Vidyate Bhavo Na Bhavo Vidyate Satah" This verse means that whatever is in existence can never be destroyed, so Brahman is imperishable, there is no change in Brahman and when there is no change how will it be destroyed? So only Brahman is imperishable and all is mortal, that which is limited will be mortal.

Mithya is aadhyaas, that is, there is such a thing which is not visible in the form of its truth, that is, 'Sadya Sat' means the world does not look as it should be. Let us take as an example that the sun looks like a plate but in reality it is a sphere. Then the question is, from where did this world come, when Brahman does not change at all, then from where did these changes happen? So Shankarji says that this state is not a characteristic of Brahman.
Talking about the mediation philosophy, A. Nagraj, the author of these, was born from the Veda Murti family of Agrahar village, at the age of 11, he had completed the reading of the Vedas, but from the Vedas he used to ask questions that if Brahma

(Truth) was It is the world that has originated, so how can all this (world) be false (untrue)? How is Brahman the cause of bondage and salvation? If everything is the pastime of Brahma, then what is the meaning of my existence or not?
What is Madhyastha Philosophy? Mashyatha philosophy (coexistence) is a new philosophy issued in India, which is propounded and written by Shri Agrahar Nagaraj. It is "existential oriented human centered thinking". Philosophy means to understand and reveal reality as it is. It has been told in the mediation philosophy that existence is coexistence. This is the ultimate truth.
Interpretation of coherence in madhyastha philosophy – to be together. with whom? wide(space); The unit (atom) of which the general is considered to be the form of energy. And the energy is called God. In the same way, the empty space that takes up the unit, that is why it is called the form of energy. The unit which is the atom from which molecules and many states are formed.

परिचय

यहा दर्शन मतलब वास्तविकता को देखना | जो सत्य , शुद्ध बुद्धि और तर्क की प्रत्यक्ष द्रष्टि पर निर्भर करता है | भारतीय दर्शन का लक्ष्य दुःख के मूल कारण अज्ञान से मानव को मुक्ति दिलाकर उसे मोक्ष की ओर प्राप्ति करवाना है |

- आस्तिक रूप से दर्शन के 6 प्रकार है :
  - न्याय
  - सांख्य
  - योग
  - मीमांशा
  - वैशेषिक
  - वेदान्त
- नास्तिक या अवैदिक रूप के 3 प्रकार है :
  - चार्वाक दर्शन
  - बौद्ध दर्शन
  - जैन दर्शन

इस इंटर्नशिप से में दर्शनो से मानवीय जीवन की समस्याओ का हल करने में उपयोगी है | जैसे की अस्तित्व दर्शन में व्यवस्था एवं समस्या को दर्शाया गया है | अगर मनुष्य जीवन मे व्यवस्था स्थापित है तो, उसको जीने का नियम भी है |

इन्ही दर्शनों मे से एके दर्शन है अद्वैत वेदान्त दर्शन जो आचार्य शंकरजी ने लिखा है जिसमे " ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या " के बारे में दर्शाया गया है , जिसमें ऐसा मानते है की मुज में ही ब्रह्म है और में ही सत्य हु और मध्यस्थ दर्शन जो ए नागराजजी ने लिखा है जिस में दर्शाया गया है की " ब्रह्म सत्य, जगत शाश्वत " जहा जगत एक व्यवस्था का सवरूप है । इस प्रोजेक्ट में मध्यस्थ दर्शन और अद्वैत वेदान्त दर्शन का

तूलनात्मक अध्ययन किया है , वर्तमान के संदर्भ मे दर्शन के विविध बिंदुओ का अध्ययन किया है और उनके सर्वोतमुखी समाधान (Holistic solution) के कार्य व्यवहार का सवरूप देखेंगे |

पृष्टभूमि एवं प्रामाणिकता

भारतीय ज्ञान पंरपरा (IKS) के द्वारा दिए गए 18 विषयो में सें दर्शन और उसके भाग रूप अद्वैत वेदान्त दर्शन और मध्यस्थ दर्शन को इस प्रोजेक्ट में दर्शाया गया है |

में इस प्रोजेक्ट के द्वारा अद्वैत वाद (जो आचार्य शंकरजी ने कहा है) और मध्यस्थ दर्शन के मुल्य एवं महत्व को सही अर्थ मे भारतीय शेक्षणिक परंपरा मे लाने का प्रयास करना चाहती हूं | इस प्रोजेक्ट मे अद्वैत वेदान्त दर्शन के साथ मध्यस्थ दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन पूर्वक अस्तित्व में व्यवस्था का स्वरूप और मानव में व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है , व्यवस्था के आधार पर मानव से सम्बन्धित जितनी भी समस्या है उनके उत्तर मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत है , प्रमाणित है इसे निरीक्षण , परीक्षण , सर्वेक्षण पूर्वक, शोध पूर्वक जांचा जा सकता है और मानव की सभी आयामों और परिस्थतियों में यह उत्तर की प्रासंगिकता को पहचाना जा सकता है | जगत में व्यवस्था के स्वरूप को अद्वैत वेदान्त दर्शन में उसका स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है |

अगर समस्या की बात करे तो मेरे थोड़े निरक्षण के बाद एसा लगता है की आज के समय मे एक मानव अपने आपमे तनाव और चिंता मे है , यही मानव अपने परिवारीक स्तर पर परिवार मे संघर्ष क रिता हुवा देखा जाता है ,यही मानव से समाज मे डर , भ्रष्टाचार और शोषण होता हुवा दिखाई देता है और यही मानव से प्रकृति मे प्रदूषण , गोबल वार्मिंग हो रही है | इन चारो अवस्था (अपने आपमे, पारिवारिक स्तर पर, समाज के स्तर पर और प्रकृति के स्तर पर) के निरीक्षण से एसा प्रतीत होता है की सारी समस्याओ का मूल कारण मनुष्य की मानसिकता है | इन समस्या के निवारण में मध्यस्थ दर्शन में अस्तित्व दर्शन का उद्देश्य और इन में व्यवस्था का स्वरूप है जिसे समज कर हम निरंतर सुख की ओर बढ़ता हैं | और अद्वैत वेदान्त दर्शन में मनुष्य को ज्ञान रूपी ब्रह्म प्राप्त और उसमे मोक्ष प्राप्त करना है |

यहाँ और एक खामी भी दिखाई पड़ती है कि जो चार अवस्थाए है [chart 2] उनमे जो मानव है वो अपना पोषण करने हेतु बाकि की तिन अवस्था मेसे लेते रहते है परंतू उन तिन अवस्था को वापिस देने में पीछे हट जाते है उनके कारन असंतुलन पैदा होता दिखाई दे रहा है | जो एक बड़ी समस्या है |

अद्वैत वेदान्त दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन में समाये गये मुख्य बिन्दुओ जैसे की जगत , माया , ईश्वर, मृत्यु एवं भय की वर्तमान जीवन में सही मात्रा में परिभासा और अन्य बिन्दु जैसे कर्म , मोक्ष , ज्ञान , योग को भारतीय शैक्षणिक विभाग में लाकर छात्रो को इसका पठन करवा कर दर्शन को वर्तमान पेढ़ी में पुनर्जीवित किया जा सकता है |

यहा मानव जिवन में सहअस्तित्व के बारे में मध्यस्थ दर्शन में एक व्यवस्था का स्वरूप है जिसको आप निचे दर्शाए गए चार्ट में देख शक्ते है |

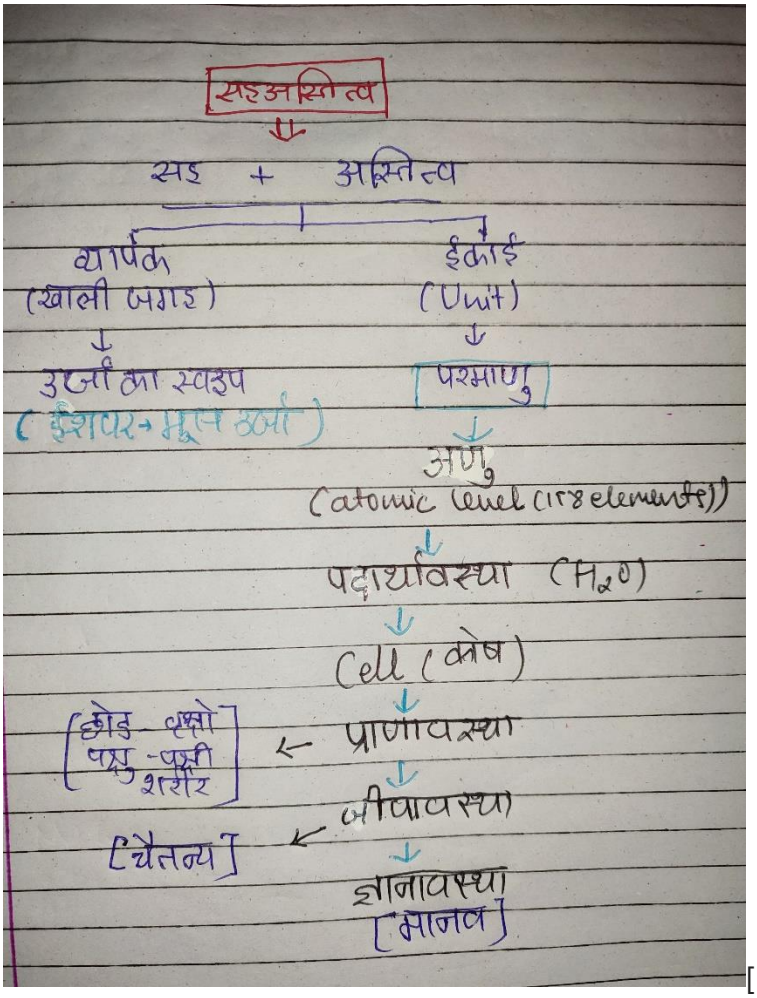

[chart 1]

इस चार्ट में समस्य जगत सहअस्तित्व के स्वरूप में आगया है | परंतू अद्वैत वेदान्त में जगत को एक माया का स्वरूप कहा गया है, यहाँ मानव के व्यवहारी जीने का कोई स्वरूप स्पष्ट रूप से देखी नहीं पड़ता है | यहा तिन सतो की बात की गई है परंतू अंत में उसमे जगत का कोई व्यवस्था का स्वरूप नहीं दीया गया है |

इससे पहले भूतकाल में कभी भी अद्वैत वेदान्त दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन का विवर्नातामक और तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है | हमने पहली बार IKS के अंतर्गत इन दोनों दर्शन का अध्ययन किया है |

परियोजना का विवरण

❖ अद्वैत वेदान्त दर्शन

आचार्य शंकर अद्वैत वेदान्त के प्रणेता है | उत्तर मीमांसा मे प्रस्तुत वेदान्त दर्शन के 6 भागो मेसे एक भाग शंकर आचार्य का अद्वैतवाद है | वेदान्त दर्शन के 3 मुख्य आधार है; उपनिषद , ब्रम्हसूत्र और भगवद गीता है |

अद्वैत वेदांत क्या है? पिछले एक सौ पचास वर्षों में पश्चिमी आध्यात्मिकता को समझने के माध्यम से प्रबुद्धता ने कुछ 'उच्च' अनुभव करने और जानने के लिए आवेग के कई भाव देखे हैं - हाल के नए युग

के माध्यम से अर्ध-आध्यात्मिक उपसंस्कृतियों के साथ। लगभग पैंतीस साल पहले अमेरिका में साइकेडेलिक क्रांति के दौरान जब पारंपरिक धार्मिक और सामाजिक संरचनाएं भारत से निर्यात गुरुओं और लामाओं के प्रवास को तोड़ रही थीं और बौद्ध देशों ने आध्यात्मिक अवधारणाओं का एक बेड़ा आयात किया था, जिसका उद्देश्य सवालों के जवाब देने वाले वयस्कों की एक पीढ़ी प्रदान करना था। जीवन का अर्थ । अनुमानतः पूर्व से आए विचारों और प्रथाओं में से कोई भी अपने मूल रूप में पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में नहीं आया, न कि जिस रूप में वे पहुंचे वह विशेष रूप से 'मूल' था, हालांकि वे पश्चिमी लोगों के लिए काफी प्राचीन और प्रामाणिक लग रहे थे जो आसानी से भयभीत थे। विदेशी ।

वास्तव में कई पहले और शुद्ध परंपराओं के शंकर थे जो पहले से ही अपने मूल निवास स्थान में दूषित हो चुके थे। दो संबंधित लेकिन अलग-अलग परंपराएं, योग और वेदांत, पहले ही भ्रष्ट हो चुकी हैं। दोनों मुक्ति के दर्शन होने का दावा करते हैं, आत्मा को उस पीड़ा से मुक्त करने में समान रूप से सक्षम हैं जो एक अनिश्चित दुनिया में जीवन की पहचान है। दोनों उपनिषदों में निहित हैं, प्रकृति पर ब्रह्मांड, व्यक्ति और ईश्वर पर सबसे पुराना सबसे आधिकारिक मौजूदा ग्रंथ। योग ईश्वर के साथ व्यक्तिगत आत्मा की एकता के अनुभव का वादा करता है। इस अनुभव को प्राप्त करने के लिए कुछ अभ्यासों की आवश्यकता होती है जो उन्हें निर्धारित करने वाले व्यक्ति के आधार पर भिन्न होते हैं। वेदांत का तर्क है कि मनुष्य खुद को कई तरह से सीमित पाता है और लगातार खुद को सीमा से मुक्त करने का प्रयास करता है। लोग धन , सुख , और योग्यता का अनुसरण करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि यह उन्हें सभी प्रकार की शारीरिक , लौकिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं से मुक्त कर देगा . वेदांत ने सीमा से मुक्ति को मानव जीवन का सबसे वांछनीय लक्ष्य बताया है। वेदांत के स्रोत उपनिषद कहते हैं कि इस सृष्टि के पहले, स्वयं, असीम अस्तित्व था।

“ब्रह्म - साक्षी सत्यं ज्ञानं अनन्तम् ब्रह्म।“ ब्रह्मसूत्रब्रह्म की अद्वितीयता - अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म के स्वरूप के कथन के विषय में उपनिषद को सर्वोच्च प्रमाण माना गया है । उपनिषद उनके श्रुति प्रस्थान हैं जिनके अनुसार वे अपरिभाषेय ब्रह्म को परिभाषित करते हैं । श्रुति में ब्रह्म के दो लक्षण हैं स्वरूप लक्षण एवं तटस्थ लक्षण |

‘ सत्यं ज्ञानं अनन्तम् ‘ है तथा ब्रह्म सूत्र का द्वितीय सूत्र ‘ जन्माद्यस्य यतः ‘ तटस्थ लक्षण है ये दोनों ही लक्षण इतर व्यावृत्ति रूप में ब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं , इदंतया नहीं । “ सत्यं ज्ञानं अनन्तम् ' यह लक्षण असत्य जड़ एवं परिच्छिन्न से व्यावृत करते हुए ब्रह्म का प्रतिपादन करता है । इसलिए यह माना जाता है कि ये तीनों ब्रह्म के गुण नहीं है और न ये तीनों पृथक् - पृथक् हैं , अपितु तीनों एक ही हैं । इस प्रकार स्वरूप लक्षण भी इदम् इत्थम् रूप से ब्रह्म का ज्ञान नहीं कराता है । ' जन्माद्यस्य यतः ' यह तटस्थ लक्षण भी ब्रह्म को जगत् की उत्पत्ति , स्थिति एवं संहार का कारण मानता है और उसका जगत का निमित्तोपादान कारण सिद्ध करता है । यह लक्षण भी इदमित्थम् रूप से ब्रह्म का निरूपण नहीं करता है । इसलिए सिद्ध होता है कि ब्रह्म शास्त्र के द्वारा ही जाना जाता है । हाँ यह अवश्य है कि शास्त्र उसका इदंतया निरूपण नहीं करता है। [1]

यहा सत्ता के बारेमे बात की गई है | जिस मे सबसे पहले प्रतिभासिक सत्ता को दर्शाया गया है जिस का मतलब आभास है , या जो सिर्फ कुछ क्षणो के लिए हो जैसे कि स्वप्न और भ्रम | दूसरा है व्यावहारिक सत्ता मे जगत की वस्तु जैसे की मेज , कुर्सी , घर आदि का समावेश है | तिसरा और आखिरी पारमार्थिक सत्ता जीस मे त्रिकाल अबाधित वस्तु का समावेश है जो ब्रह्म है | यहा कहते है की विविधता जगत के पीछे की पायारूप एकता है ऐसे ही भारतीय चिंतन तथा अर्वाचीन वैज्ञानिक विचारणा दोनों स्वीकार है |

वेदान्त कहते है की ये यातना प्राणिको मुक्ति केलिए संघर्ष है , मनुष्यकी बाबत मे ये यातना उसको आगे लेके जाती है , और ये भी कहता है की बंधनकी चेतना मुक्ति का प्रथम सोपान है | जामत , स्वप्न , सुषुप्ति तीनों ही अवस्थाओ में अव्यभिचरित रूप से विद्यमान रहने वाले जीव का जो अधिष्ठान भूत चेतना तत्व है

, वही साक्षी है । इस साक्षी चैतन्य के द्वारा ही अध्यरत होने के कारण ही जीव अपनी प्रमाण वृत्तियों के माध्यम से जगत का ज्ञान प्राप्त करता है साक्षी प्रमाता का भी प्रमाता और दृष्टि का भी द्रष्टा है । साक्षी रूप द्रष्टा की द्रष्टि का कभी बिपरिलोप नहीं होता । वह नित्य द्रष्टा है अतः समस्त ज्ञान व्यापार जिसके द्वारा संचालित है , स्वयं ज्ञाता को भी साक्षात् जो देखता है , वहीं साक्षी है । जीव भी साक्षी के प्रति साक्ष्य ही है जीव के अतिरिक्त इस जगत का समस्त व्यापार जैसे भाव या अभाव रूप में कोई भी वस्तु प्रमाता , प्रमेय प्रमाण तथा नामरूप में अभिव्यक्त होने वाले समस्त पदार्थ वास्तव में इस साक्षी के साक्ष्य होने के कारण ही है यदि सम्पूर्ण जगत का अवभासक यह साक्षी रूप चैतन्य न हो तो इस संसार में कुछ भी प्रकाशित नहीं हो पायेगा यह साक्षी रूप आत्मा जीव का अन्तरंगभूत है , उसकी प्रत्यागात्मा है और इस कारण यह नितान्त अपरोक्ष है । व्यक्ति अपने साक्षी स्वरूप आत्मा का निषेध नहीं कर सकता है , सारे निषेधों और सन्देहों से परे यह स्वत सिद्ध और स्वयं प्रकाश है । [1]

इन के सिवा अद्वैतवाद मे ब्रम्ह , माया और जगत के बारे मे दर्शाया गया है | जिस मे ब्रम्ह को सत् कहा गया है (सत् यानिकी जो त्रिकाल अबाधित है या जो तीनों काल मे है) | यहा ब्रह्म को निर्गुण (गुणो से परे) कहा गया है | अद्वैत वेदान्त का अध्ययन करेने से मुझे मालूम हुवा है की ब्रह्म ही परम सत्य है | " ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या" मे आचार्य शंकर कहते है की अगर कोई सत्य है तो वो सिर्फ ब्रह्म है | शंकरजी यहाँ सत्य यानि truth की बात नहीं कर रहे है वह सत् यानिकी अस्तित्व (existence) को ब्रह्म कहते है | यहाँ ब्रह्म को अनंत कहते है और कहते है के जो वास्तु अनंत है उसका आकार नहीं होसकता |

सांख्य प्रकृति को (nature) मानते है | परंतू शंकरजी कहते है की जो वास्तु में बदलाव आता है वो सत् नहीं हो सकता सत् वो है जो आज भी वही है कल भी वही था और आने वाले कल में भी वही रहेगा उसमे बदलाव नहीं आसकता | " नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः " इस श्लोक का अर्थ है की जो चीज अस्तित्व में है उसका कभी नाश नहीं हो सकता , तो ब्रह्म अविनाशी , ब्रह्म में कोई परिवर्तन ही नहीं होता और जब परिवर्तन नहीं होता ततो उसका नाश कैसे होगा ? तो ब्रह्म ही अविनाशी है और सब नश्वर है , जो सिमित होगी वो नश्वर होगी |

अगर आज की बात करे तो वैज्ञानिक कहते है की हर एक वास्तु एटम से बनी हुई है, छोटे छोटे एटोम्स मिलके कोई चीज का स्वरूप लेते है | किन्तु शंकरजी कहते है की ब्रह्म को तोडा नहीं जासकता तो एटोम्स से बनी वास्तु ब्रह्म नहीं हो सकती |

ब्रह्म व्यापक है और ब्रह्म पे समय (time) लागु नहीं पडता | यहाँ 'कब', 'कहा', 'किस जगह', 'किधर', या 'इधर' जैसे शब्द नहीं आसकते | फिर अगर ऐसा पूछे की ब्रह्म कहा है? तो कहते है कि ब्रह्म हर जगह है, अगर आप कहदो की यहाँ ब्रह्म नहीं है तो इसका मतलब ब्रह्म के टूकडे हो गए, वो खंडित हो गया जो संभव नहीं है | ब्रह्म को अनादी कहा गया है, यानि की यह कबसे सुरू हुआ उसका कुछ पता नहीं लगा सकते | इन सब बतो से कहेते है की ब्रह्म निर्विकारी है | उसमे कोई गुण नहीं है पर संख्या के अनुसार प्रकृति मे तीन गुण है | सत्तो गुण, रजो गुण और तमो गुण | तमो गुण यानि की अंधकार परंतु अंधकार ब्रह्म को नहीं ढाकसकता | रजो गुण हमेशा परिवर्तन शील है परंतु ब्रह्म मे परिवर्तन नहीं हो सकता | ब्रह्म परिणामी नहीं है, ब्रह्म के अंदर परिणाम नहीं होसकता |

तो प्रश्न होता है की ब्रह्म क्या है? तो शंकरजी कहते है की ब्रह्म अनिर्वचनीय है, भाषा मे ब्रह्म का वर्णन नहीं होसकता | वेदभी ब्रह्म को नकारात्मक व्याख्या देते है सकारात्मक व्याख्या कोई नहीं है | वेद कहते है "नैति-नैति" मतलब येभी ब्रह्म नहीं है और वोभी ब्रह्म नहीं है | ये जगत भी ब्रह्म नहीं है ब्राह्मण भी ब्रह्म नहीं है, यह इसेभी पर है, इसेभी बड़ा है |

फिर आति है मिथ्या | मिथ्या अध्यास है यानि की एक एसी चीज है जो अपने सत्य के स्वरूप में नहीं दिखाई देती है यानि के 'सदा सत्' मतलब जगत जैसा होना चाहिए वैसा नही दीखता | एक उदारण के

स्वरूप में लेते है की सूर्य थाली जैसा दिखाई देता है पर वास्तव में वह एक गोला है | तो फिर प्रश्न होता है की ये जगत कहा से आया, जब ब्रह्म बदलता ही नहीं है तो ये बदलाव कहा से हो गए? तो शंकरजी कहते है की ये अवस्था ब्रह्म का स्वरूप लक्षण नहीं है | ये प्रतिभासिक है जैसे देवदत् की सोने की स्थिति और खड़े होने की स्थिति लेले तो देवदत् तो वाही है परंतू यह देवदत् के स्वरूप मा नहीं है | यह इनके ऊपर आध्यास करदी गई है | जो अभेद में भी भेद व्यैदा करदे उसे मिथ्या कहते है | जिस का नाम और रूप व्यैदा करदे उसे कहते है माया | माया भी अनादी है |

माया क्या करती है? माया आधार को ढकदेती है, माया अज्ञान रेप है, अज्ञान के कारण से हम उस आधार को पूरा नही देखपाते | उदाहरण स्वरूप हमें रेल की पटरी मिलती नहीं फिर भी मिलती हुई देखी देती है | माया ने भेद उदपान कर दिया है | साडी चीज़े जो माया ने बनाई है वो सब नश्वर है, उनसभी चीजों का नाश हो जाता है | जब ब्रह्म का ज्ञान जो जाता है तो दुःख सुख सब नष्ट हो जाता है | तो दो चीज ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या | और कहते है की आत्मा ब्रह्म एक ही है | अंत में आत्मा ब्रह्म में मिल जाती है, जिसे मोक्ष कहा गया है |

- ❖ मध्यस्थ दर्शन

मध्यस्थ दर्शन क्या है ? अस्तित्व सहअस्तित्व है | यही परम सत्य है | मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) भारत वर्ष में निर्गमित एक नया दर्शन है जो श्री अग्रहार नागराज द्वारा प्रतिपादित एवं लिखित है | यह "अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन" है |दर्शन का तात्पर्य वास्तविकता को जैसे है वैसे ही समझने तथा प्रकट करने से है |

- ➢ स्रोत

मध्यस्थ दर्शन अस्तित्व में अनुभव की ही अभिव्यक्ति सम्प्रेष्णा प्रकाशन है|यह 'साधना-समाधि-संयम विधि' से प्राप्त हुआ है | यह दर्शन अथा से इति तक प्रमाणिक व् व्यवहारिक है| यह दर्शन स्वयं प्रयोग व्यवहार और अनुभवात्मक प्रमाणों के कसौटी से निकला हुआ है, इसीलिए निर्विवाद है |

- ➢ विषय वस्तु

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर नि:सृत जीवन दर्शन है |यह चैतन्य प्रकृति का रहस्य उद्घाटन करता है | इस दर्शन में यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का प्रतिपादन है |

- ➢ मानव जीनें में प्रयोजन

इस दर्शन में मानव के जीने के सभी आयाम तथा सभी स्थितियों से सम्बंधित सभी प्रश्नों के समाधान सार्वभौम रूप में प्राप्त हैं | जाति, वर्ग, एवं सम्प्रदाय विहीन अखंड मानव समाज को पाने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति प्रतिपादित करता है, जिससे सार्वभौम मानवीय व्यवस्था संभव हो जिससे ही मानव जीवन का चिरंकांक्षित सुख शांति संतोष आनंद संभवहै|[2]

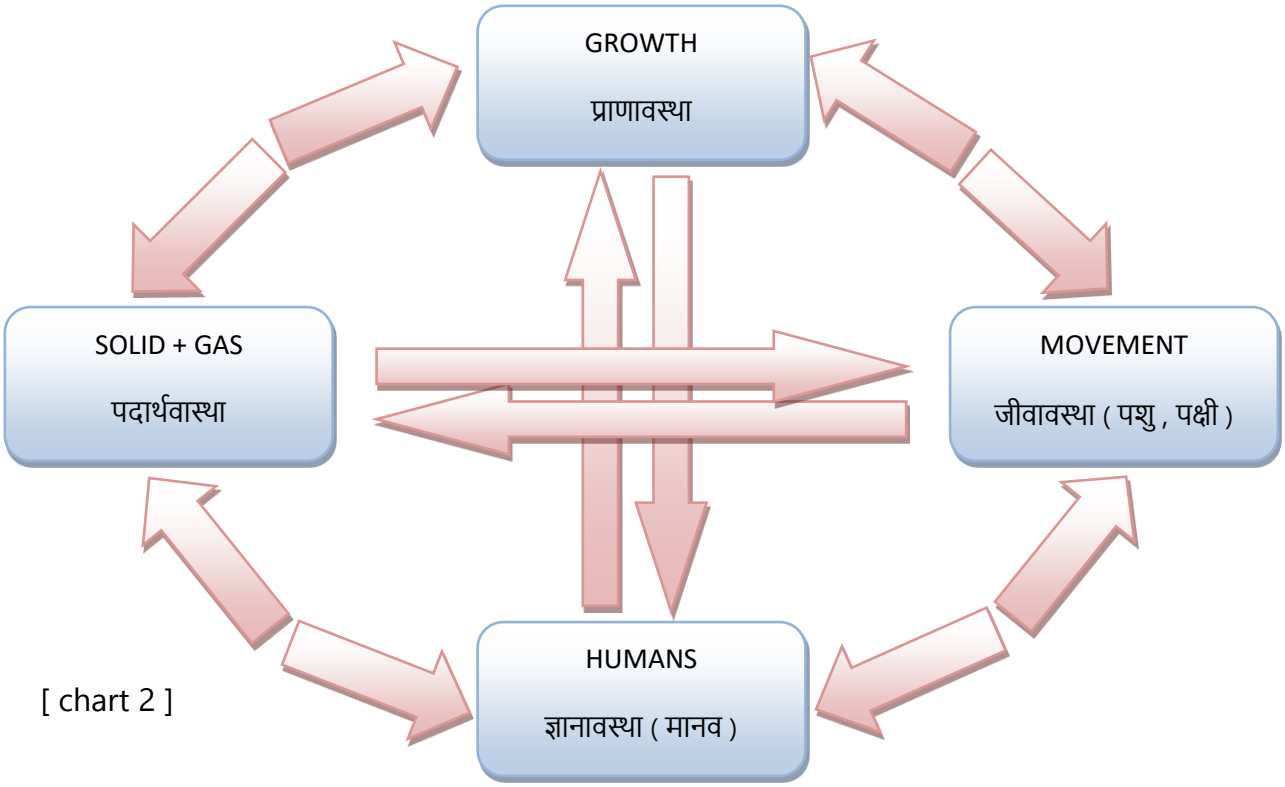

[chart 2]

ऊपर दर्शाया गया चार्ट मध्यस्थ दर्शन के चार अवस्ता के प्रतीक है | जिस मे सबसे पहले आता है पदार्थवास्था जहा अणु और परमाणु है जिसमे आकाश, जल, धरती एवं हवा का समावेश होता है | फिर आता है प्राणावस्था जिसमे में छोड़, वृक्ष आदि का समावेश होता है | जीवावस्था में सारे पशु-पक्षी का समावेश है | ज्ञानावस्था में आते है मानव | ये चारो अवस्थाए सामने-सामने एक दूसरे को पूर्ण करते है और उनको संतुलित करते है, एक दुसरे को पोषित (enrichment) करता है ताकि ये चारो अपने अस्तित्व को बनाए रखे | इन अवस्थाओ को व्यवस्था में रहना अनिवार्य है और यह व्यवस्था में स्थिरता, निश्चितता एवं निरंतरता होनी अनिवार्या है | यहाँ सर्वोत्मुखी समाधान का अर्थ है की व्यक्ति अपने आपमें सुखी समाधानित् और समजू हो , व्यक्ति के अपने परिवार में समाधान एवं समृधि हो, समाज में अभय पूर्वक जिसके और प्रकृति में संतुलन हो और यही संतुलन से सहअस्तित्व है |

मध्यस्थ दर्शन में ए . नागराजजी ने जगत को सहअस्तित्व के रूप बताया है , जिस में व्यापक (खाली जगह) और इकाई आती है | इन दोनो का एक साथ होने को सहअस्तित्व कहा गया है | ऊपर दर्शाए गए चार्ट में चार अवस्था की बात की गई थी | जो है पदार्थवास्था , प्रणावस्था , जीवावस्था और ज्ञानावस्था जिन में जमीन, पानी, पेड, पोधे, पशु, पक्षी और मानव है | हम पेड, पोधे, पशु एवं पक्षी में अलग-अलग जाती देख सकते है परंतू मानव एक ही जाती है | पर आज के समय में मानव ने मानव में जाती बनानी शुरू करदी है जो रंग, आकर, धन, धर्म, आदि के आधर पर है |

अब हम मध्यस्थ दर्शन और अद्वैत वेदान्त के तूलनात्मक अध्ययन की तरफ बढ़ेंगे | यहाँ सबसे पहले तो आधर की बात करे तो मध्यस्थ दर्शन मानव को आधार मानके चलता है और अद्वैत वेदान्त दर्शन ब्रह्म को आधार मानके चलता है | यहा 'जगत' कि बात करे तो मध्यस्थ दर्शन मे कहते है की जगत सहअस्तित्व है और अद्वैत वेदान्त मे जगत को माया या मिथ्या कहा गया है, यानि की कोई एसी वस्तु जो पूर्णा सत्य नहीं है | जगत में दिखाई पड़ती चीजो को भी माया कहा है और ब्रह्म को सत् मानते है | जहा मध्यस्थ दर्शन में इश्वर के साथ-साथ मानव को भी करता कहा गया है | मध्यस्थ दर्शन में कहते है की मानव को

कर्म सवतंत्रता और कल्पना शीलता दीगई है , जिसकी वजह से मानव के पासे विकल्प (choice) है | उन विकल्प के कारन मानव यातो अस्तित्व सहज नियम को जानके जीता है और उसे स्वीकार करके निरंतर सुख की ओर बढ़ता है या फिर मानव मनमानी करता है (self-centred) जहा वह सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है |

मध्यस्थ दर्शन और अद्वैत वेदान्त दर्शन दोनों में शरीर और आत्मा को अलग कहा गया है जो यह भी कह ते है की शरीर का नाश होसकता है किन्तु आत्मा का नाश मुमकिन नहीं है |

- तुलनात्मक विषय
  - पध्धति
    यहाँ अद्वैत वेदान्त में श्रवण , मनन , निदिध्यासन की पद्धति से ज्ञान को प्राप्त किया जास्कता है |
    मध्यस्थ दर्शन में अध्ययन विधि से ज्ञान प्राप्त होता है | यहाँ जीवन पध्धति में अस्तित्व (संसार / जगत / प्रकृति) के अंदर पहले लक्ष्य (purpose of life) है शर्म , कर्म और भक्ति | अगर मानव का कोई लक्ष्य नहीं है तो वो अस्पष्ट , तनाव और निराशा प्राप्त होगी | फिर है परस्पर जीने का स्वरूप जो मानव – मानव और मानव – प्रकृति के बिच है | परिवार और समाज में अखंडता होगी अगर लक्ष्य स्पष्ट नहीं है तो समाज में आभाव और अविश्वास पैदा होगा | फिर राज्य में व्यवस्था का स्वरूप होगा तो उसकी सुरक्षा होगी; नहीं तो राज्य में द्वेष , तिरस्कार, इर्षा होगी | आखिर में अर्थतंत्र (तन / मन / धन) का सद उपयोग होगा व्यवस्था के स्वरूप में; नहीं तो लोभ , शोषण , भ्रष्टाचार , चोरी , अपराध, व्यसन ऐवं प्रदुषण भी होगा |

  - प्रयोजन
    अद्वैत वेदान्त दर्शन में तिन सत्ता के बारे में बात की गई है | जिस मे सबसे पहले प्रतिभासिक सत्ता को दर्शाया गया है जिस का मतलब आभास है , या जो सिर्फ कुछ क्षणो के लिए हो जैसे कि स्वप्न और भ्रम | दूसरा है व्यावहारिक सत्ता मे जगत की वस्तु जैसे की मेज , कुर्सी , घर आदि का समावेश है | तिसरा और आखिरी पारमार्थिक सत्ता जीस मे त्रिकाल अबाधित वस्तु का समावेश है जो ब्रह्म है |
    मध्यस्थ दर्शन में चार अवस्था की बात की गई है जिस मे सबसे पहले आता है पदार्थवास्था जहा अणु और परमाणु है जिसमे आकाश, जल, धरती एवं हवा का समावेश होता है | फिर आता है प्राणावस्था जिसमे में छोड़, वृक्ष आदि का समावेश होता है | जीवावस्था में सारे पशु-पक्षी का समावेश है | ज्ञानावस्था में आते है मानव | ये चारो अवस्थाए सामने-सामने एक दूसरे को पूर्ण करते है और उनको संतुलित करते है, एक दुसरे को पोषित (enrichment) करता है ताकि ये चारो अपने अस्तित्व को बनाए रखे | यहा हम अद्वैत वेदान्त को ब्रह्म केन्द्रित देख सकते है किन्तु मध्यस्थ में अस्तित्व का स्वरूप देख सकते है |

  - मोक्ष
    अद्वैत वेदान्त दर्शन में मोक्ष को ब्रह्म रूपी ज्ञान में समा जाना है |
    मध्यस्थ दर्शन में मोक्ष को पूर्ण स्वतंत्रता जागुर्ती पूर्णता को प्राप्त करना है |
  - प्रमाण
    अद्वैत वेदान्त दर्शन शास्त्रों को प्रमाण मनके चलता है, जहा मध्यस्थ दर्शन अनुभव , व्यव्हार और प्रयोग को प्रमाण मान कर चलता है |
  - गुण

अद्वैत वेदान्त दर्शन में ब्रह्म को निर्गुण कहा गया है किन्तु मध्यस्थ में तिन गुण है सम (रचना) , विसम (विरचना) और मध्यस्थ (बना रहना) इसे एक उदाहरण के साथ समजा ते है की एक बिज से पोधा उगता है (सम) और पेड का स्वरूप लेता है और एक दिन वह पेड मर जाता है (विसम) और इस मृत्यु और जीवन के बिच के भाग को मध्यस्थ कहा है |

- मध्यस्थ दर्शन का जन्म

ए नागराज जी जिसने मध्यस्थ दर्शन को लिखा है मध्यस्थ दर्शन का जन्म ए नागराज जी के प्रश्नों के उत्तर वेदांत तो में नो मिलने से हुआ था | ए नागराज अग्रहार गांव के वेद मूर्ति परिवार से थे 11 वर्ष की उम्र में उन्होंने वेदों का पठन पूरा कर दिया था किंतु वेदों में से उनको प्रश्न उठते थे कि यदि ब्रह्मा (सत्य) से ही जगत की उत्पत्ति हुई है तो यह सब (जगत)मिथ्या (असत्य) कैसे हो सकता ह ? ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष का कारण कैसे है ?यदि सबकुछ ब्रह्म की लीला है तो मेरे होने या ना होने का क्या अर्थ है ?

जीज्ञाशु ए नागराज जी ने उनके प्रश्नों हेतु हर एक कार्य किया जिससे उनके प्रश्नों का उत्तर मिल सकता था जिसमें उन्होंने अपने मामा जी के यहां विधिवत वेदों का अध्ययन किया परंतु इस अध्ययन के बाद भी उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला उसके बाद वह उनके मामा जी द्वारा आयो जी एक विद्वान सभा में जिसमें बड़े-बड़े विद्वान वेदो और उपनिषदों के जानकार शामिल थे परंतु वहां पर भी उनके प्रश्नों के उत्तर उनको ना मिले आखिर में निर्णय हुआ कि यह ज्ञान की प्राप्ति हेतु समाधि लेना आवश्यक था |

गुरुजी माताजी और पत्नी की अनुमति के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि वह अमरकंटक समाधि के लिए जाएंगे जहां सहपरिवार गए थे जहां उनको कुछ वर्ष के परिश्रम के बाद समाधि प्राप्त हुई समाधि से बाहर आने के बाद उन्हें पता चला की समाधि में सिर्फ उनके आशा विचार और इच्छा चुप हो गए लेकिन उनके प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं हुए | समाधि से उनके प्रश्नों के उत्तर ना मिलने पर उन्होंने शास्त्रवद विधि को उलट कर समाधि से ध्यान की तरफ संयम से ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश की लगभग 2 वर्ष के संयम संपन्न होने पर उनको सब अज्ञात ज्ञात हुआ जहां उनको समस्त अस्तित्व अपने वास्तविक रूप में दिखाएं पढ़ने लगा था और समझ में आने लगा था |

संयम में स्थित होने के पश्चात् अस्तित्व को समझने की प्रक्रिया का वर्णन महाराज नागराज ने कुछ इस तरह से किया था की धीरे - धीरे प्रकृति अपने आप उमड़ - उमड़ कर सामने आने लगी थी। धरती अपने स्वरूप में आई । वनस्पतियाँ अपने स्वरूप में आई । जीव संसार अपने स्वरूप में आया । मानव संसार अपने स्वरूप में आया । पहले धरती आई फिर ऐसी अनंत धरतियाँ आई । यह कोई महीने भर चला होगा । जैसे सिनेमा में देखते हैं वैसा मुझको संसार दिखता रहा । इसके आगे चलने पर एक चट्टान , फिर उसके विस्तार में जाने पर , जैसे चूना पिघलता है वह पिघला , और पिघलकर के फैला और फैल करके फैलते - फैलते उस जगह में आ गया जहाँ उसका हर भाग स्वचालित स्थिति में था । इस स्वचालित वस्तु को मैंने अनेक परमाणुओं ' नाम दिया । ऐसा मैंने परमाणु को देखा ।

एक दिन मैं संयम में देखता हूँ परमाणु अपने आप एक लाइन लग गए । उन्हें मैं गिन सकता था । कुछ संख्या के बाद परमाणुओं का अजीर्ण होना मिला । जो परमाणु अपने में से कुछ परमाणु अंशों को बहिर्गत करना चाह रहे हैं उनको मैंने अजीर्ण नाम दिया । उससे पहले कुछ परमाणुओं को भूखे परमाणुओं के रूप में देखा । वे परमाणु अपने में कुछ और परमाणु अंशों को समा लेना चाह रहे हैं । इन दोनों तरह के परमाणुओं के मध्य में मैंने एक ऐसे परमाणु को भी देखा जो अपने पूँजाकार में घूम रहा है । जबकि बाकी सब परमाणु अपनी जगह में हैं । जब उस परमाणु को देखा तब पता लगा इसकी गठन तृप्ति हो गयी है । इस तृप्त परमाणु को " गठनपूर्ण परमाणु ' नाम दिया ... यही " चैतन्य इकाई " है , " जीवन " है |

इस तरह महाराज नागराजजी ने संयम से सहअस्तित्व का अध्ययन 5 वर्ष तक किया | इस ज्ञान से उनको अपने सरे प्रश्नों के उत्तर मिल गए और साथ ही समस्त मानव जाती को एक नया दर्शन उपलब्ध हो गया | [3]

पध्दति अथवा प्रक्रियाएं

इन दोनों दर्शनो के अध्ययन कर ने हेतु में ने अपने मेंटर से लेक्चर लिए | जिसमे मेने दोनों दर्शनों की महत्ता को पहचाना | मध्यस्थ का अध्ययन में इस इंटर्नशिप से पहेले भी किया था इस लिए मध्यस्थ दर्शन के ओर ज्ञान के लिए मैं ने AICTE student workshop on universal human value – 1 का वर्कशॉप किया | और अद्वैत वेदान्त दर्शन के ज्ञान हेतु मैंने अद्वैतवाद के बारे में इन्टरनेट से प्राप्त की, और कई पुस्तकों का पठान भी किया, और इस का ज्ञान को स्पष्ट रूप से समजने के लिए यहाँ राजकोट में स्थित स्वामी विवेकानदजी के राम कृष्णा आश्रम में स्वामीजी से मुलाकात ली |

परिणाम

यहाँ तक के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाल सकते है की अद्वैत वेदान्त दर्शन सिर्फ ब्रह्म तक सिमित रह जाता है | यहाँ मानव के मानव से व्यावहारिकता के संदर्भ में कोई स्पष्ट बात नहीं की गई है | मानव के अपने आप में जीने का स्वरूप नहीं दर्शाया गया है, ना ही पारिवारिक स्तर पर, ना ही सामाजिक स्तर पर और ना ही प्रकृति के साथ; जो सभी एक मानव के जीवन का भाग है |

यहाँ हम सिर्फ बदलती सचाई पर ध्यान देना ही जरुरी नहीं है किन्तु जो निरंतर (ultimate) सत्य है उसपर ध्यान देना भी अवश्यक है, जिस्व एक उत्तर अद्वैत वेदान्त में है जो ब्रह्म सत्य है जिस के साथ साथ यह तर्क भी आता है की ये जगत क्या है ? जिसका उत्तर मध्यस्थ दर्शन में जीने की स्वरूप से है |

आज के शिक्षा व्यवस्था में जीवन के ज्ञान की महत्ता समज पड़ती है और इनकी जरुरत भी मालूम पड़ती है | अगर आज के समय में मानव पिडा, समस्या या दुविधा में है तो उसका कारन अज्ञान दिखाई देता है | अगर इस ज्ञान को अपने जीवन प्रणाली में व्यव्हार के रूप में ले तो हम अपने और अपने साथ जीते मानव की समस्याओ को दूर कर सकते है एवं बिना किसी कष्ट या दुःख से प्रभावित हो कर सुख पूर्वक जिसक ते है |

विचार-विमर्श

मेरे अभी तक के अध्ययन से मुझे यह पता चलता है की दोनों दर्शनों का ज्ञान महत्वपूर्ण है और जीवन में इन दोनो दर्शन का ज्ञान अनिवार्य है | अभी तक के अध्ययन से जीवन में लेने जैसी कई चीजे है जैसे की अद्वैत वेदान्त में से पता चलता है की जगत के माया स्वरूप है यानि की दिखावे की वस्तुओ से प्रभावित नहीं होना और जानना की वह उसका सत्य स्वरूप नहीं है और मध्यस्थ दर्शन में जीवन में निरंतर सुख की प्राप्ति हो सकती है | वर्तमान परिस्थिति में दर्शन के संदर्भ में मानव सम्बंधित समस्या की समीक्षा एवं शास्त्रोक्त पद्धति से समस्या का निवारण और वस्तुस्थिति का अध्ययन से कुछ समस्या ध्यान में आई की मूल रूप से समस्या मानसिकता का है और यह हम शेक्षणिक विभाग में बदलाव लाने से हो सकता है | जैसे की मध्यस्थ में कहा है की सब सहअस्तित्वमें है तो शेक्षणिक कार्यो में यह समजाय जए की जगत

प्रकृति, मानव, पशु, पक्षी वगेरे सब सहअस्तित्व में है | हम गणित का उदाहरण ले तो जोड़ना और घटाने में हम एक बालक को कुछ इस तरह से सिखा सकते है की वह जोड़ना और घटाने के साथ साथ बाटने का भाव भी देसकते है | जैसे की एक बच्ची के पास 5 टॉफी है और उसे भाई के पास टॉफी नहीं है तो वह क्या करेगी ? एसा पूछकर उनको बाट ने को सिखाएँगे और इस से यह भी स्पष्ट होगा की कोई भी वास्तु अपनि जगह बदलती है वो कही गायब नहीं होती | इस समज के साथ कभी दो भाइयो के बीच लड़ाई नहीं होगी क्यों की उनको पता है की वास्तु के आने या जाने से सम्बन्ध में कोई बदलाव नहीं आसक्त | यहाँ हम समृधि का भाव भी समजा सकते है जैसे की एक बच्चे को पूछे की उनको लिख ने के लिए कितनी पेन कि आवश्यकता है तो वो कहेंगे की एक फीर हम पूछेंगे की उनको अपने पास कितनी पेन रखनी चाहीए वो कहे एक तो समजाएगे की आप अपने पास दो पेन रखेंगे क्योकि अगर एक पेन खोगई या आपके दोस्त को चाहिए तो अपनी आवश्यकता से थोडा अधिक होना ही समृधि है | विज्ञान में साभी वस्तु ए अलग अलग नहीं है , सब व्यवस्था में एक मूल इकाई में है और सब का एक निश्चित आचरण है | अर्थशास्त्र में आज की बात करे तो सिर्फ मुनाफा ही देखा जाता है किन्तु हम उसे समज कर सिर्फ आवश्यकता के अनुसार ही उत्पादन करे तो सिर्फ रोटी , कपडा , माकन , दुर्गमन , दुश्रावन और दूरदर्शन की ही आवश्यकता है |

निष्कर्ष और सिफारिशें

निष्कर्ष के रूपमे मैं यह कहना चाहती हु की आज के समय में एक मानव को अपने मूल्य पता होने चाही ए , जिससे मानव और उसके साथ जीते सभी मानव एक निश्चित आचरण से जिएतो समाज में व्यवस्था का स्वरूप बन सकता है | वह उस मूल्यों के अनुसार जीने पर मानव निरंतर सुख की ओर बढ़ता है |

मेरी यह सिफारिश है की मध्यस्थ दर्शन में दर्शाए गए संबधो को, भावनाओ को अस्तित्व में व्यवस्था के स्वरूप को , मानव व्यव्हार जैसे मूल्यों को शेक्षणिक क्षेत्र में जोड़ा जाए | ताकि एक मूल्यवान मानव और मानव समाज का निर्माण हो | आज के इस वैज्ञानिक युग में मानव को अगर सही समज प्राप्त हो तो वो प्रकृति को समज कर निरंतर सुख को प्राप्त करने का प्रयास करता है और अगर सही समज न दी जाए तो वो आत्म-केन्द्रित बन जाता है और मनमानी की तरफ बढ़ता है | इसलिए शैक्षणिक एवं सामाजिक धोरण पर दर्शन का अवश्य अभ्यास होना चाहिए |

स्वीकृतियाँ

इस इन्टरन्शिप में , मै एक विध्यार्थिनी के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का आभार व्यक्त करती हु जिसके द्वारा मुझे इन 18 विषयो मेसे एक जो दर्शन शास्त्र है उसके गहन अध्ययन करने का मौका मिला एवं उसके द्वारा वर्तमान स्थिति और समस्याओ का निवारण दर्शन के माध्यम से केसे लाया जाए वो जानने का मौका मिला | और अपनी उनिवर्सिटी का भी आभार मानना चाहती हु की जिसके द्वारा मुझे भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के साथ जुडने का मौका मिला और अपने मैंटर को भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहती हु की जिनके अंतर्गत मेने इन दोनों दर्शनों का अभ्यास किया एवं वर्तमान समय मे इन दोनों दर्शनों की परिभाषा का भी पता चला |

संदर्भ

1)The nature and function of Sakshi in the different schools of Advaita Vedanta by Ranjay Pratap sinh, published in 2002

2)www.madhyasth-darshan.info

3)दिव्या पथ (जीवन परिचय – शश्रध्देय ए. नागराज), लेखक सुरेन्द्र पाल , मुद्रण : अगस्त २०१५

4)Google Scholar

5)Free digital library by government of India.

6)www.jvidya.com

7)https://youtu.be/utznH3EiWTQ

परिशिष्ट

शैक्षणीक कार्य पर - इन दोनों दर्शनो के अध्ययन से भारतीय दर्शन प्रणाली के प्रति जागृतता बढाई जा सकती है | सामाजिक स्तर पर – जीवन के लख्य को पहचाना जा सकता है , मात्र दर्शन के अध्ययन से एवं निरंतर सुख पूर्वक जीने के स्वरूप को पहेचान सकते है , अस्तित्व के प्रयोजन को समजा जा सकता है और दर्शन को तर्कपूर्ण विधि से लोक्व्यपिकरण किया जा सकता है |